लोकाभिव्यक्तियों में प्रतिबिंबित

लोक देवता

-प्रो शैलेंद्रकुमार शर्मा

लोक की सत्ता सर्वव्यापक सत्ता है। यह विराट जनसमुदाय का बोधक है, जहां व्यष्टि-समष्टि का जीवन व्यापक चेतना के धरातल पर स्पंदित होता आया है। भूमि, जन और संस्कृति का जैविक समुच्चय लोक में निरंतर पल्लवित-पुष्पित होता आ रहा है। यही वजह है कि लोक साहित्य और संस्कृति के आस्वाद, अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए विशेष निष्ठा और सतर्कता की आवश्यकता होती है। लोक में गहराई से उतरे बिना उसके साथ न्याय संभव नहीं है।

सूक्ष्मता से विचार करें तो लोक साहित्य और संस्कृति अथाह हैं। इनके माध्यम से इतिहास और जातीय स्मृतियों की अनेकानेक परतें उद्घाटित होती हैं। यह शोधकर्ता पर निर्भर करता है कि वह उनकी कितनी थाह पाता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में पूजित लोक देवताओं से सम्बद्ध लोक-साहित्य, कला-रूप और संस्कृति इसी तथ्य की ओर संकेत करते हैं। भारतीय साहित्य एवं कला रूपों में बहुपूज्य देवी-देवताओं के साथ अनेकानेक गौण और लोक देवी/देवताओं की महिमाशाली उपस्थिति रही है, जिनका रूपांकन साहित्य से लेकर विविध लोकाभिव्यक्तियों में अनेक सदियों से होता आ रहा है। आज मालवा-निमाड और राजस्थान-गुजरात सहित पश्चिम-मध्य भारत के प्रमुख लोक देवताओं पर एकाग्र लोक साहित्य, बहुविध कलाभिव्यक्तियों के साथ ही उनके व्यापक असर को लेकर व्यापक मंथन की जरूरत है।

लोक कण्ठानुकण्ठ में जीवन्त प्रसिद्ध उक्ति है:

पाबू, हरबू, रामदे, मांगळियामेहा।
पांचों पीर पधारजो, गोगाजी जेहा।।

या फिर

थाने तो ध्यावे आखो मारवा ? जी।
आखो गुजरात जी, आखो राजस्थान जी।
खम्माखम्मा हो रामा पीर।
हे अजमल जी राकंवरा।
म्हारे रुणीजेराधणीया।
बाई सुगना राबीरा
म्हारी अरजीसुणो जी रामा पीर।
म्हारो हेलो सुणो जी रामा पीर।

पश्चिम एवं मध्य भारत में बहु लोकप्रिय रामदेव जी, पाबू जी, देवनारायण जी, हरबू जी, गोगा जी, तेजा जी, ताकाजी, मेहा जी, कल्ला जी, जूण जी सहित कई लोक देवताओं से जुड़ा लोक साहित्य विपुल मात्रा में वाचिक परम्परा में प्रवाहमान है। यह साहित्य अनुश्रुति, इतिहास और लोक-संस्कृति की जैविक अंतर्क्रिया का विलक्षण दृष्टांत है। लोक साहित्य परंपरा और संस्कृति अथाह महासागर की तरह है। लोक-देवता साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ युग जीवन और पर्यावरण की विविध छबियां सहज उपलब्ध हैं। इसके साथ ही इनमें अंतर्निहित कई जाति-समुदायों से जुड़े विशिष्ट प्रसंग और घटनाओं में ऐतिहासिक सन्दर्भ बिखरे पड़े हैं। उनकी सूक्ष्म पड़ताल की आवश्यकता है। प्रागैतिहासिक काल से अब तक घरों, थानकों और देवालयों में बनाए जाने वाले नाग, संजा एवं विभिन्न लोक-देवताओं से जुड़े विविध भित्तिचित्रों और प्रतीकों के बीच सातत्य बना हुआ है।

भारत के पश्चिम-मध्य भारत में बहुपूज्य लोक देवता देवनारायण (लगभग 11-12वीं शती) संबंधी ही लोकगाथा सहित विविध लोक-कथा एवं गाथाओं में मध्यकालीन पश्चिम-मध्य भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का समर्थ प्रतिफलन हुआ है।